بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 10.03.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विवेक पूर्ण कथनों की रोशनी में क़ुर्आन करीम की श्रेष्टता, महत्ता, स्तर एवं महानता का बयान।

जमाअत के दोस्तों को दुआओं पर ज़ोर देने की पुनः प्ररणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 10 मार्च 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल ख़ुत्बों में क़ुर्आन करीम के सुन्दर गुणों का वर्णन हो रहा है। हज़रत मसीह माऊद अलहिस्सलाम ने क़ुर्आन करीम के सौन्द्रय एवं विशेषताएँ बयान करते हुए फ़रमाया कि मैं सच कहता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ़ ऐसी सम्पूर्ण एवं संयुक्त पुस्तक है कि कोई पुस्तक इसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। आपने उदारहण देते हुए फ़रमाया कि क्या वेद में कोई ऐसी श्रुति है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ का मुक़ाबला करे, यदि केवल मुंह से स्वीकार कर लेना कोई चीज़ है अर्थात इसके फलों तथा परिणामों की आवश्यकता नहीं तो फिर सारी दुनिया किसी न किसी रंग में ख़ुदा तआला के अस्तित्व को स्वीकार करती है तथा भक्ति, उपासना, दान दक्षिणा को भी अच्छा समझती है तथा किसी न किसी रूप में इन बातों पर अमल भी करती है। हिन्दुओं को जवाब देते हुए फ़रमाया कि- फिर वेदों ने आकर दुनिया को क्या दिया, या तो यह साबित करो कि जो क़ौमें वेद को नहीं मानतीं, उनमें नेकियों का अभाव है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरीफ़ को जहाँ से शुरु किया है, उन प्रगतियों का वादा कर लिया है जो प्राकृतिक रूप से आत्मा पुकारती है। अतः सूरः फ़ातिहः में اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ की शिक्षा दो और फ़रमाया कि तुम दुआ करो कि ऐ अल्लाह, हमें सत्य मार्ग की हिदायत फ़रमा। हिदायत देने की शिक्षा दी तो वादा भो कर लिया कि मैं सत्य मार्ग पर चलाऊंगा, जो उन लोगों की राह है जिन पर तेरे पुरस्कार इत्यादि हुए। इस दुआ के साथ ही सूरः बक़रा की पहली आयत में शुभ सूचना दे दी कि ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ यदि हिदायत की दुआ सिखाई तो उसको प्राप्त करने के लिए एक कार्य-पद्यति भी बता दी कि इसके अनुसार कर्म करने से मुत्तक़ियों को हिदायत मिलेगी। मानो आत्माएँ दुआ

करती हैं तथा साथ ही क़बूलियत अपना प्रभाव दिखाती है तथा वह वादा क़ुर्आन करीम के नाज़िल होने के रूप में पूरा होता है, यह ख़ुदा तआला की दया और कृपा है जो उसने फ़रमा दिया किन्तु दुनिया इससे अपरिचित एवं पूर्छित है तथा इससे दूर रह कर नष्ट हो रही है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं फिर कहता हूँ कि ख़ुदा ने क़ुर्आन मजीद में मुत्तक़ियों के जो गुण बयान फ़रमाए हैं उनको छोटे गुणों में रखा है परन्तु जब इंसान उस पर ईमान ला कर उसे अपनी हिदायत के लिए कार्य शैली बनाता है तो हिदायत के उन उच्च स्तरों तथा बुलन्दियों को पा लेता है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ में लक्ष्य रखे हैं। फिर फ़रमाया कि क़ुर्आन करीम की शिक्षा एक सम्पूर्ण शिक्षा है। यह ज़माना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण का एक और प्रमाण है और परिणाम- اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ में फ़रमा दिया। मानो उस समय ज़माने की अवस्था आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अवतरण का प्रमाण थे। फ़रमाया कि यह भाग नबुव्वत का दूसरा भाग है। कमाल यह नहीं कि सूरतें उतार दीं बल्कि चैतन्य की परिपूर्णता एवं मन की स्वच्छता को पूरा कर दिया। पिशाचों से इंसान, बुद्धिमान, नैतिक तथा ईश्वरीय मानव बना दिया। इंसान को सभ्यता के तथा मन की शुद्धि करने के उच्चतम मार्ग सिखा दिए तथा इनकी चरम सीमा भी कर दी, इसी प्रकार अल्लाह की किताब को भी सम्पूर्ण कर दिया, कोई सत्य एवं सच्चाई नहीं जो क़ुर्आन शरीफ़ में न हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक और ग़लती मुसलमानों में है कि वे हदीस को क़ुर्आन शरीफ़ पर प्राथ्मिकता देते हैं, जबकि यह बात ग़लत है। क़ुर्आन शरीफ़ एक विश्वसनीय स्तर रखता है तथा हदीस का स्थान धारणाओं से सम्बंधित है। हदीस निर्णायक नहीं अपितु क़ुर्आन उस पर निर्णायक है, निर्णय करना क़ुर्आन का काम है जबकि हदीस क़ुर्आन की व्याख्या है। हदीस को उस सीमा तक ही मानना आवश्यक है कि क़ुर्आन शरीफ़ के विरुद्ध न पड़े तथा उसके अनुसार हो किन्तु यदि उसके विरुद्ध पड़े तो वह हदीस नहीं बल्कि रद्द करने योग्य कथन है। परन्तु क़ुर्आन शरीफ़ को समझने के लिए हदीस अनिवार्य है। क़ुर्आन शरीफ़ में जो अल्लाह के आदेश नाज़िल हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको क्रियात्मक रंग में करके दिखा दिया तथा एक उदाहरण स्थापित कर दिया, यदि यह नमूना न होता तो इस्लाम समझ में न आ सकता, परन्तु असल क़ुर्आन है। कुछ कश्फ़ का अनुभव रखन वाले आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीधे ही ऐसी हदीसें सुनते हैं जिनका ज्ञान दूसरों को नहीं हुआ या तो उपलब्ध हदीसों की पुष्टि कर लेते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में भी लिखा हुआ है कि मैंने भी कुछ हदीसं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से स्वयं सुनी हैं (कश्फ़ में)।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुर्आन की सरल एवं सुगम भाषा के बारे में फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन शरोफ़ इतना अधिक सरल अलंकारों से परिपूर्ण, उपयुक्त एव सूक्षमता एवं नर्मी एवं शोभा रखता है कि यदि किसी उत्सुक आलोचक तथा कठोर विरोधी को जो अरबी भाषा को लिखने तथा साहित्य में पूर्णत्या निपुणता रखता हो, शासक की ओर से जो शासनीय आदेश सुना दिया जाए कि यदि तुम बीस वर्ष में क़ुर्आन करीम की दो चार पंक्तियों के समान कोई निबन्ध न दिखा सको तो उसके कारण तुमको मृत्यु दंड दिया जाएगा, फिर भी उसका इतना सामर्थ्य नहीं कि वह यह कृत कर सके चाहे दुनिया भर के सहस्त्रों

साहित्य लेखकों को अपना सहयोगी बना ले। यह है कमाल क़ुर्आन करीम का तथा उसकी सरलता एवं सुगमता का। आप अलै. ने फ़रमाया कि यह कोई ख़यालाी और बनावटी बात नहीं है बल्कि जब से क़ुर्आन शरीफ़ नाज़िल हुआ है यह चेलैन्ज दुनिया के सामने है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि सरल एवं सुगम साहित्यिक भाषा में क़ुर्आन शरीफ़ का मुक़ाबला असम्भव है।

फिर क़ुआन करीम की सरल सुगम एवं साहित्यिक भाषा की सुन्दर शैली बयान करते हुए फ़रमाते हैं- एक मजलिस में आप अलै. ने फ़रमाया कि जितनी ये आयतें तथा निशान यहाँ प्रकट हो रहे हैं ये वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही के चमत्कार एवं करामात तथा ये भविष्य वाणियाँ क़ुर्आन शरीफ़ ही की पेशगोईयाँ हैं क्यूँकि आप ही के अनुकरण तथा क़ुर्आन शरीफ़ ही के फल हैं और इस समय कोई ऐसा धर्म नहों है जिसका अनुयायी तथा अनुकरण करने वाला यह दावा कर सकता हो कि वह भविष्य वाणियाँ कर सकता है अथवा उससे करामतें प्रकट होती हैं इस लिए इस दृष्टि से क़ुर्आन शरीफ़ का चमत्कार समस्त पुस्तकों की प्रतिष्ठा से बढ़ा हुआ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक छोटी से छोटी सूरत भी यदि क़ुर्आन शरीफ़ की लेकर देख ली जावे तो मालूम होगा कि उसमें सरलता सुगमता एवं अलंकारों के स्तरों के अतिरिक्त शिक्षा की मूल विशेषताओं एवं कमालात को उसमें भर दिया है। सूरः इख़लास ही को देखो कि तौहीद के सम्पूर्ण स्तरों को बयान फ़रमा दिया है तथा हर प्रकार के शिर्क का रद्द कर दिया है। इसी प्रकार सूरः फ़ातिहा को देखो कितनी चमत्कारी है, छोटी सी सूरत जिसकी सात आयतें हैं किन्तु वास्तव में पूरे क़ुर्आन शरीफ़ की कला, सारांश तथा सूचि है फिर उसमें ख़ुदा तआला के अस्तित्व, उसके गुण, दुआ की आवश्यकता तथा उसकी क़बूलियत के साधन एवं माध्यम, लाभदायक एवं हितकारी दुआओं का तरीक़ा, हानिकारक राहों से बचने की हिदायत सिखाई है। प्रायः पुस्तकों तथा धार्मिक लोगों को देखोगे कि वे दूसरे धर्म की बुराईयाँ तथा त्रूटियाँ बयान करते हैं तथा दूसरों की शिक्षाओं पर टिप्पणियाँ करते हैं परन्तु उन टिप्पणियों को पेश करते हुए यह कोई धार्मिक व्यक्ति नहीं करता कि उसके समान कोई उत्तम शिक्षा भी पेश करे तथा दिखाए कि यदि में अमुक बुरी बात से बचना चाहता हूँ तो इसके बजाए यह अच्छी शिक्षा देता हूँ, यह किसी धर्म में नहीं, यह गर्व केवल क़ुर्आन शरीफ़ को है कि जहाँ वह दूसरे झूठे धर्मों को रद्द करता है तथा उनकी अनुचित शिक्षाओं को खोलता है वहाँ असली तथा वास्तविक शिक्षा को पेश करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि कुछ मूढ़ लोग कहते हैं कि हम क़ुर्आन शरीफ़ को नहीं समझ सकते इस लिए इसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए, क्यूँकि यह बड़ा कठिन है। यह उनकी ग़लती है, फ़रमाया कि क़ुर्आन शरीफ़ ने आस्था से सम्बंधित बातों को ऐसे सरल अलंकारों के साथ समझाया है कि जो अद्वित्तीय तथा बेजोड़ है और उसके तर्क दिलों पर प्रभाव डालते हैं। क़ुर्आन ऐसा सरल एवं सुगम है कि अरब देश के जंगली क्षेत्रों के निवासियों को जो पूर्णतः अशिक्षित थे, समझा दिया था तो फिर अब क्यूँकर नहीं समझ सकते। सीधा, सच्चा तथा सरल तर्क वह है जो क़ुर्आन शरीफ़ में है। एक सीधी राह है जो ख़ुदा तआला ने हमको सिखला दी है, चाहिए कि आदमी क़ुर्आन शरीफ़ को ध्यान पूर्वक पढ़े, इसके आदेशों तथा निषेधों को अलग अलग करके देखे तथा इनके निदशा क अनुसार कर्म करे तो इसी से अपने ख़ुदा को ख़ुश कर लेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम वास्तविक ख़ुदा को पेश करता है। ख़ुदा तआला की कृपा है कि क़ुर्आन शरीफ़ ने ऐसा ख़ुदा पेश नहीं किया जो ऐसी त्रूटि पूर्ण विशेषताओं वाला हो कि न वह आत्माओं का मालिक है, न किसी को मुक्ति दे सकता है तथा न किसी की क्षमा को स्वीकार कर सकता है बल्कि हम क़ुर्आन शरीफ़ के अनुसार उस ख़ुदा के बन्दे हैं जो हमारा रचीयता है, मालिक है, राज़िक़ है, रहमान है, रहीम है, मालिकि यौमिद्दीन है। मोमिनों के लिए शुक्र का अवसर है कि उसने हमको ऐसी किताब प्रदान की जो उसकी मूल विशेषताओं को अभिव्यक्त करती है। यह ख़ुदा तआला को अत्यंत महान अनुकम्पा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान एवं विवेक तथा क़ुर्आन करीम की विशषताएं एवं स्तर व उच्च कोटि की बातें इन्शाअल्लाह आगे बयान होंगी। अल्लाह तआला हमें इन बातों को समझने और अमल करने और क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ने और समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने गत दिनों बंगला देश के जलसा सालाना पर आतंकवादियों एवं कट्टर पंथियों के हमले का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि यह जलसा पुलिस एवं प्रशासन के विश्वास दिलाने के बाद आयोजित किया गया था किन्तु जब बुलवाईयों ने हमला किया तो पुलिस तमाशाई बनी खड़ी रही तथा उसके पश्चात ऊपर से आदेश आने के बाद एक्शन (action) लिया परन्तु उस समय तक अत्याचार एवं विनाश अपनी चरम सीमा को पहुंच गया था। इसके पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने इस हमले में शहादत पाने वाले मुकर्रम ज़ाहिद हुसैन साहब की शहादत का वर्णन किया और फ़रमाया कि अल्लाह तआला दुष्टों की पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए और हम पर अपनी कृपा एवं दया फ़रमाए।

दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए हुज़ूर-ए-अनवर ने जमाअत के दोस्तों को फ़रमाया कि आजकल दुआओं पर अत्यधिक ज़ोर दें।

तत्पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम कमाल बदाह साहब अल-जज़ायर, डा. शमीम अहमद मलिक साहब ऑफ़ कैनेडा, मुकर्रम फ़रहाद अहमद अमीनी साहब ऑफ़ जर्मनी तथा मुकर्रम चौधरी जावेद अहमद बिसमिल साहब ऑफ़ कैनेडा के देहान्त पर उनका सद्वर्णन करते हुए इन मृतकों की नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131